श्रमण २००४ ०१ (फोल्डर नं. ०२५०५२)

सम्पादक - डॉ. शिवप्रसाद

मुख्य टाइटल

सम्पादकीय

अनुक्रमणिका

लाढ प्रदेश में महावीर – डॉ. रमाकान्त जैन ----------१-३

त्रस और स्थावर का विभाग – समणी मंगल प्रज्ञा ---------- ४-९

जैन दर्शन में रत्नत्रय – प्रो. अमरनाथ पाण्डेय ---------- १०-१४

जैन दर्शन में निहित वैज्ञानिक तत्त्व – डॉ. अनुपम जैन ----------१५-३२

जैनधर्म में प्रतिपादित षडवश्यक की समीक्षा और ईसकी प्रासंगिकता – श्री अनिल कुमार सोनकर ---------- ३३-४५

पार्श्वाभ्युदय काव्य में अभिव्यंजित मेघदूत काव्य – डॉ. मधु अग्रवाल----------४६-५१

सामान्य केवली और अर्हन्तपद – एक समीक्षा – साध्वी विजयश्री---------- ५२-५६

जीवन्धरचम्पू में पर्यावरण की अवधारणा – डॉ. कमलेश कुमार जैन ---------- ५७-६३

जैन दर्शन में अनेकान्तवाद – डॉ. शारदा सिंह ---------- ६४-६८

श्रमण आचार व्यवस्था – ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – कु. नीतू द्विवेदी ---------- ६९-७६

साधारण सिद्धसेनसूरि रचित विलासवईकहा – श्री वेद प्रकाश गर्ग---------- ७७-७९

जैन दर्शन का कर्म – सिद्धान्त एवं उसके समान्तर भारतीय दर्शन में प्रचलित अन्य सिद्धान्त – डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय ---------- ८०-९०

जैन गुफाएँ – ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्त्व – डॉ. एन. के. शर्मा ---------- ९१-९८

जैन दर्शन एवं योगवाशिष्ठ में मृत्यु विचार – श्री मनोज कुमार तिवारी ---------- ९९-११०

महावीर एवं बुद्ध का वर्षावास – डॉ. मनीषा सिन्हा ---------- १११-११५

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमायें (होशंगाबाद संग्रहालय के संदर्भ में) – डॉ. गुलनाज तंवर------ ११६-११७

महाराणा प्रताप का पत्र अकबर प्रतिबोधक जैनाचार्य हीरविजयसूरि के नाम – डॉ. सोहनलाल पटनी ---------- ११८-११९

खरतरगच्छ – क्षेमकीर्ति शाखा का ईतिहास – शिवप्रसाद ---------- १२०-१२८

Concept of Evolution in Jainism – Dr. M. R. Mehata ---------- 129-134

Jaina Sramana Tradition from Adinatha to Parsvanatha – Col. D. S. Baya Sreyas --- 135-147

Social Aspect of Non – Violence – Dr. B. N. Sinha ---------- 148-179

विधापीठ के प्रांगण में ---------- १७४-१७५

जैन जगत ---------- १७६-१८२

साहित्य सत्कार ---------- १८३-१९६

सुर सुंदरी चरियं ---------- १-७३

ज्ञानदीप (चूडामणिसार) ----------१-१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org